कुतुबुद्दीन ऐबक (1206–1210 ई.)

- कुतुबुद्दीन ऐबक सर्वप्रथम 1192 से 1206 ई. तक मोहम्मद गौरी के भारतीय देशों का गवर्नर रहा। जब प्रारम्भ में 1192 में अपने राजधानी इन्द्रप्रस्थ को बनाया।
- 1206 में मो. गौरी की मृत्यु के बाद उनका राज्य उसके तीन सेना नायकों में विभाजित हो गया –

1. ताजुद्दीन याल्दौज – याल्दौज ने स्वयं को गजनी का स्वतंत्र शासक घोषित दिया था।
2. नासिरूद्दीन कुबाचाः कुबाचा सिन्ध और मुल्तान का स्वतंत्र शासक बन गया था।
3. कुतुबुद्दीन ऐबक एबक ने हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र शासक घोषित कर दिया था।

कुतुबुद्दीन ऐबक ने प्रारम्भ में याल्हौज और कुबाचा के साथ अपने सम्बन्धों को मधुर बनाने के साथ, उनके साथ विवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया अपनी बहिन का विवाह उसने नासिरूद्दीन कुवैचा के साथ कर दिया जबकि एल्हौज की लड़की से उसने स्वयं विवाह कर लिया।

- किन्तु वैवाहिक सम्बन्धों के बावजूद भी याल्दौज और कुवैचा के दिल्ली सल्तनत् पर आक्रमण की सम्भावना को देखते हुए उसने अपनी राजधानी लाहौर को बनाया। और जैसा कि पूर्वानुमान लगाया था 1206 के अन्त में याल्दौज द्वारा पंजाब पर आक्रमण किया गया किन्तु कुतुबुद्दीन ऐबक ने उसे विफल कर दिया था। उसके बाद मल्दौज और कुवैचा द्वारा कुतुबुद्दीन ऐबक के शासनकाल में पुनः भारतीय प्रदेशों पर आक्रमण करने का साहस नहीं किया।

Dr. Kailash Chand Gurjar

- कुतुबुद्वीन ऐबक ने प्रारम्भ में सुल्तान की उपाधि धारण न करके 'सिपह–ए–सालार' की उपाधि धारण की थी–कारण–उसके बारे में इतिहासकारों का मानना है कि सम्भवतः मोहम्मद गौरी द्वारा अपने जीवन काल में कुतुबुद्वीन ऐबक के दासता से मुक्त नहीं किया था।
- इसलिए कुतुबुद्वीन ऐबक के नाम के कोई सिक्के उपलब्ध नहीं हुए।
- 1208 ई. में जब मोहम्मद गौरी के भतीजे और गोर के शासक गयासुद्दीन महमूद गौरी द्वारा कुतुबुद्वीन ऐबक को दासता से मुक्त कर दिया गया और भारत का स्वतंत्र शासक स्वीकार कर लिया गया तब उसने सुल्तान की उपाधि धारण की थी।
- कुतुबुद्वीन एबक की मृत्यु 1210 ई. में लाहौर में चौगान खेलते समय घोड़े से गिर जाने से हो गई। चौगान को ही अब पोलो के नाम से जाना जाता है।

समकालीन मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा ऐबक को लाखबक्श के नाम से पुकारा है। लाखबक्श बहुत बड़े दानी को कहा जाता है।

कुतुबुद्वीन ऐबक के द्वारा दो मस्जिदो को निर्मित कराये जाने का उल्लेख मिलता है –

1. **कुवत–उल–इस्लाम**– यह मस्जिद दिल्ली में कुतुबमीनार के पास स्थित है और यह भारत में निर्मित पहली मस्जिद मानी जाती है जिसका निर्माण ऐबक द्वारा 1195 ई. में हिन्दू मन्दिर को तोड़कर कराया गया था।

2. **ढाई दिन का झोपड़ा** :– ढाई दिन का झोपड़ा यह मस्जिद अजमेर में स्थित है जिसका निर्माण ऐबक द्वारा 1200 ई. में करवाया गया था। यह मस्जिद मूलतः अजमेर के चौहान शासक विग्रह राज चतुर्थ (1151–63) द्वारा निर्मित संस्कृत पाठ्शाल थी उसी को तोड़कर ऐबक ने उसकी जगह ढाई दिन का झोपड़ा मस्जिद बना दी थी। इस संस्कृत पाठ्शाला की दिवारों पर

निग्रहराज चतुर्थ ने ''हरकेली'' नाटक को लिखवाया था जिसकी रचना स्वयं विग्रहराज चतुर्थ ने संस्कृत भाषा में की थी।

1. कुतुबुद्दीन ऐबक के दरबार में फारसी के दो विद्वान रहा करते थे हसन निजामी – हसन निजामी ने ऐबक के संरक्षण में ही रहकर अपने ग्रन्थ ताजुलमहासिर की फारसी भाषा में रचना की।

2. **फखेमुदीर** :–इसने ऐबक के समय में अपने ग्रन्थ 'मादाबुलहर्ब' की रचना की। इसमें उसने ऐबक के शासनकाल की घटनाओं का वर्णन किया।

ताजुल महासिर में 1191 अर्थात् तराइन के प्रथम युद्ध से लेकर 1215 (इल्तुतमिश) तक का दिल्ली सल्तनत का इतिहास लिखा।

उलेमा कौन थे ?

उलेमा मुस्लिम विद्वानों को कहा जाता था। उलेमा दो प्रकार के होते थे – (1) उलेमा–ए–अख्रत।

(2) उलेमा–ए–दुनियाबी।

उलेमाः ए– अख्रत– वे मुस्लिम विद्वान होते थे जिनकी सांसारिक मामलों में कोई रूचि नहीं होती थी। जो सदैव ईश्वर की भक्ति में लीन रहते थे, जबकि उलेमा–ए–दुनियाबी सांसारिक मामलों में पूर्ण रूचि लेते थे। उलेमा धार्मिक दृष्टि से बडे कट्टर विचारों के होते थे और सामान्यतः न्याय विभाग, धर्म विभाग और शिक्षा विभाग में उलेमाओं को ही नियुक्त किया जाता था। यद्यपि सभी दिल्ली सुल्तान उलेमाओं का पूर्ण सम्मान करते थे किन्तु फिरोज तुगलक को छोड़कर अन्य किसी भी दिल्ली सुल्तान ने उलेगाओं की राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप करने की इजाजत नहीं दी थी।

अमीर वर्ग से आप क्या समझते है ?

मध्यकाल में उच्च अधिकारी वर्ग को अमीर वर्ग के नाम से जाना जाता था और सभी महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर अमीर वर्ग को ही नियुक्त किया जाता था। अमीरो की तीन उपाधियां होती थी

1. अमीर – अमीर वर्ग में सबसे छोटी पदवी अमीर ही होती थी।
2. मलिक – अमीर के ऊपर मलिक होता है।
3. खान – मलिक के ऊपर होता था। खान की उपाधि ही अमीर वर्ग में सबसे बड़ी पदवी थी किन्तु यदि सुल्तान किसी खान को और अधिक महत्व देना चाहता था ते उसे उलुख खान की उपाधि दी जाती थी। (बलवन को)।

इल्तुतमिश (1211–1236 ई)

शम्सुद्दीन इल्तुतमिश इल्बरी तुर्क था। गौरी के आदेश पर 1200 ई. में कुतुबद्दीन ऐबक ने इल्तुतमिश को दासता से मुक्त कर दिया था। 1210 में लाहौर के अमीरों ने ऐबक की मृत्यु के बाद आरामशाह को सुल्तान घोषित कर दिया जबकि दिल्ली के अमीरों ने इल्तुतमिश के बदायूँ से बुलाकर सुल्तान घोषित कर दिया। इल्तुतमिश ने आरामशाह को युद्ध में पराजित करके मार दिया।

सिंहासन पर बैठने के बाद इल्तुतमिश ने 1215 ई. में तराईन के तीसरे युद्ध में ताजुद्दीन याल्दौाज को पराजित करके उसका वध कर दिया। 1221 ई. में मंगोल नेता चंगेज खाँ के आक्रमण से भारत की रक्षा की। ख्वारिज्म के युवराज जलालुद्दीन मंगबरनी को दिल्ली में शरण देने से इन्कार करके संभावित मंगोल आक्रमण को टाल दिया।

सुल्तान ने बयाना, रणथम्भोर, मण्डोर, अजमेर, नागौर और ग्वालियर को सैनिक अभियानों द्वारा दिल्ली सल्तनत में मिला लिया। 1228 ई. में सिन्धु व मल्तान पर अधिकार कर लिया गया तथा 1230 ई. में पुनः बंगाल को जीतकर दिल्ली सल्तनत में मिलाया गया।

1229 ई. में बगदाद के तत्कालीन खलीफा अल्मुस्पोर बिल्लाह ने मान्यता पत्र भेजकर इल्तुतमिश को दिल्ली का स्वतंत्र शासक स्वीकार किया। 1232 ई. में इल्तुतमिश ने अपनी पुत्री रजिया के अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।

40 विश्वसनीय दासों का एक मण्डल बनाया जिसे तुर्कान–ए–चिहलगानी चालीसा मण्डल कहा जाता है। पूरी सल्तनत को इक्ताओं में बाँटा। मुद्रा सुधार किए–चांदी का सिक्का टंका तथा तांबे का सिक्का जीतल जारी किए। ये दोनो अरबी सिक्के थे।

रजिया (1236–40 ई.)

इल्तुतमिश ने रजिया को अपना उत्तराधिकारी चुना था। किन्तु उसकी मृत्यु के अगले दिन ही अमीरों व प्रान्तिय अधिकारियों ने रूकनुद्दीन फिरोजशाह को दिल्ली को दिल्ली का सुल्तान बना दिया। वह एक विलासी प्रवृत्ति का व्यक्ति था। जो दिल्ली सल्तनत् को सम्भालने में असमर्थ था। उसके काल में शासन की बागडोर उसकी माता एक तुर्की दासी शाहतुर्कान के हाथों में थी जिस ने आतंक का राज कायम कर दिया। परिणामस्वरूप देश के विभिन्न क्षेत्रों में विद्रोह शुरू हो गये।

इन परिस्थितियों में रजिया ने जनता का सहयोग प्राप्त कर राजमहल पर आक्रमण कर दिया। शाहतुर्कान को कैद कर लिया। सेना व अमीर वर्ग रजिया से मिल गया। रूकनुद्दीन को भी बन्धी बनाकर मार दिया गया। इस प्रकार बड़ी आसानी से जनता के समर्थन से रजिया दिल्ली की सुल्तान बनी। कुछ अमीरों ने रजिया का विरोध किया। जिनका रजिया ने दिल्ली से दूर यमुना के तट पर शिविर लगाकर दमन कर दिया। अपनी इस क्षमता व कुशलता से रजिया की प्रसिद्धि और फैल गई। अब एक सांवैधानिक परम्परा प्रारम्भ हुई। लखनौती से लेकर दवल तक सारे अमीरों व प्रान्तीय अधिकारियों ने रजिया की सत्ता को स्वीकार कर लिया।

रजिया ने पर्दा त्याग दिया और पुरूषों के वस्त्र धारण करना शुरू कर दिया। कुबा (कोट) कुलाह (टोपी) पहनकर जनता के सामने आने लगी। सम्पूर्ण

शासन की बागडोर स्वयं अपने हाथों में ले ली। सल्तनत् के सारे अधिकारियों, सेना अध्यक्षों की नियुक्ति की। उसने ऐतगीन को ''अमीरे हाजिब'' नियुक्त किया तथा जमालुद्दीन याकूब को ''अमीरे आखूर'' (अश्वशाला का प्रधान) नियुक्त किया। याकूब अबीसिनिया का निवासी था। अतः तुर्की अधिकारी उससे प्रसन्न नहीं थे। लाहौर के गवर्नर कबीर खाँ ने विद्रोह कर दिया। जिसका दमन सफलता से रजिया ने किया। कुछ अमीर याकूब के खिलाफ षड़यंत्र करने लगे अतः उन्होनें उसकी हत्या कर दी। रजिया का याकूब से विशेष लगाव था। फलस्वरूप तुर्की सरदारों व अमीरों ने रजिया को बंधी बना लिया और मुइजुद्दीन बहराम खाँ को दिल्ली का सुल्तान बना दिया तथा प्रभावशाली अमीरों ने राज्य के उच्च पद व इक्ताओं को आपस में बाँट लिया। उनका रजिया से युद्ध हुआ तथा कैथल के पास रजिया की हत्या कर दी गई।

वह एक महान् सुल्तान थी। उसके शासकीय गुणों से अमीर प्रभावित थे लेकिन स्त्रीत्व से खुश नहीं थे तथा उसका याकूब के प्रति विशेष लगाव भी अमीरों को पसंद नहीं था। इस कारण उसे सत्ताविहिन कर दिया।

बलबन का राजत्व का सिद्धान्त

बलबन एक दास के पद से मंत्री और फिर सुल्तान बना। जो उसकी योग्यता व प्रतिभा का प्रमाण था। अपने शासन के दौरान सुल्तान ने अपने साम्राज्य की शक्ति को संगठित रखा। प्रशासन संभाला और राजवंश के पतन को रोका। बलबन का यह अन्दाजा था कि बिना कुशल नेतृत्व के अभिजात (अमीर) वर्ग को संगठित रख पाना मुश्किल है। अतः उसने देश के कुशल व प्रसिद्ध अधिकारियों की नियुक्ति अपने राज्य में की। कानूनों को कठोरता से लागू कर सुल्तान के पद की प्रतिष्ठा व गरिमा बनाई।

बलबन पहला सुल्तान था जिससे राजत्व के सिद्धान्त कि विस्तृत विवेचना की। सुल्तान के उच्च पद व सामन्तों के बीच संघर्ष को रोकने के लिए सुल्तान के पद और अधिक प्रतिष्ठित बनाना अनिवार्य था। विभिन्न फारसी परम्पराओं को ध्यान

में रखते हुये राजत्व के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। जिसके अनुसार राजा का हृदय ईश्वर की कीर्ति को प्रतिबिम्बित करता है। यदि वह निरन्तर ईश्वर्य ज्योति प्राप्त नहीं करता है तो अनेक विभिन्न महत्वपूर्ण कार्य को पूरा नहीं कर पायेगा। अतः राजा को हृदय और आत्मा से ईश्वर की दइया के लिये अनुग्रहीत होना चाहिए। बलबन का राजत्व का सिद्धान्त फारस के राज्त्व सिद्धान्त से प्रभावित था। जिसके अनुसार राजा को पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधित्व माना गया है। उसने दिखावटी मान–मर्यादा और प्रतिष्ठा को अनिवार्य कर दिया। सार्वजनिक रूप से विभिन्न समारोह पर प्रतिबन्ध लगा दिया। सुल्तान के चारो ओर नंगी तलवारों के साथ सदैव सुरक्षा पहरी दरबार की मुद्रा को और भी गम्भीर बना देते है। आम जनता को व अधिकारी कर्मचारियों को राजा की आज्ञा का पालन करना अनिवार्य कर दिया गया।

बलबन खलीफा की राजनीतिक सत्ता को मान्यता देता है। उसने अपने सिक्कों पर खलीफा का नाम भी अंकित करवाया। जनहित के कार्यों के लिए आदर्श व्यवस्था कायम की, कुरान के नियमों के अनुसार शासन पर अधिक बल दिया। इस प्रकार बलबन ने सुल्तान के पद की गरीमा और प्रतिष्ठा को ओर अधिक ऊँचा कर अन्य सामन्तों से अधिक महत्वपूर्ण बनाया है। 1286–87 में मृत्यु बलबन की मृत्यु हे जाती है।

Dr. Kailash Chand Gurjar